ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 4 July 2020

बच्चों पर कार्टून्स शो के प्रभाव

सारिका कुमारी
शोध विद्यार्थी (गृह विज्ञान), पटना विश्वविद्यालय
ईमेल: sarika.irca@gmail.com

सारांश

बच्चा एक श्वेत पत्र की तरह है, उनका व्यक्तित्व और व्यवहार की रचना छोटी आयु में सबसे अधिक होती है । बच्चों के विकासात्मक चरण में अक्सर कार्टून शो और कार्टून चरित्रों के अधिकतम प्रदर्शन में बाधा आती है। कार्टून शो और पात्रों का व्यापक प्रभाव बच्चों के बीच कई मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों का मूल कारण रहा है। माता-पिता के दृष्टिकोण के अनुसार, कार्टून शो ने बच्चों की विशेषताओं को गहराई से परेशान किया है, इस प्रकार उन्हें कार्टून चरित्रों के रूप में व्यवहार, विचार प्रक्रिया और रीति-रिवाजों को अनुकूलित करने के लिए भ्रमित किया जाता है। यह अध्ययन बच्चों के मानस की गहन अर्थ और समझ में बहुत कुछ देता है और अनिवार्य रूप से उनके संतान के दर्शकों के मानकों को नियंत्रित करने में माता-पिता की भूमिका पर केंद्रित है। सर्वेक्षण की गुणात्मक पद्धति का उपयोग करते हुए, कागजात बच्चों के बीच द्वि घातुमान टीवी देखने और उनके टीवी देखने के समय को पुनर्निर्धारित करने के संभावित तरीकों में देरी करता है, जो प्रभावी अभिभावक मार्गदर्शक तकनीक का एक परिणाम है।

शब्द कुंजी

कार्टून शो, बच्चे, माता-पिता, मनोवैज्ञानिक

प्रस्तावना

कार्टून एक टीवी कार्यक्रम या लघु फिल्म के रूप में परिभाषित किया गया है, आमतौर पर एक मजाकिया, पात्रों और चित्रों का उपयोग करके बनाया जाता है । उपरोक्त के संदर्भ में, कार्टून अनिवार्य रूप से एक एनिमेटेड टुकड़ा है जिसका उपयोग समकालीन विश्व मामलों को हाथ से खींची गई छवियों से प्रत्यक्ष प्रतिबिंब के साथ करने के लिए किया जाता है। यह काल्पनिक टुकड़ा एक संदेश देता है, जो बहु-सांस्कृतिक है, इस प्रकार समाज की वास्तविकता को इंगित करता है कि हम मनुष्य में जीवित हैं।

बच्चे और कार्टून दो कारक हैं जो समाज की भलाई पर बहुत अधिक प्रभाव डाल सकते हैं। जैसा कि ऊपर परिभाषित किया गया है, कार्टून सामाजिक मामलों का एक तथ्यात्मक चित्रण है, जिसे बच्चों की नैतिक समझ के लिए उबाला जाता है। संभवतः 70% बच्चे कार्टून में सामग्री के आधार पर धर्मांध होते हैं। टॉम और जेरी जैसे कार्टून चरित्रों से प्रेरित, कुछ बच्चों को अपने भाई-बहनों और करीबी लोगों के साथ संघर्ष करने के लिए मनाया जाता है। यद्यपि यह एक हल्के अर्थों में किया जाता है, इसमें गंभीर मनोवैज्ञानिक प्रभाव होते हैं। इसके अलावा, यह एक तर्क है कि प्रतियोगी कार्टून के खिलाफ दोषारोपण करते हैं और बच्चों के लिए एक शैक्षिक उपकरण के रूप में कार्टून शो से संबंधित हैं। यह धारणा यह भी मानती है कि बच्चों की परवरिश कार्टून द्वारा उत्पादित सामग्री पर नहीं होती है, बल्कि माता-पिता और अभिभावकों की परवरिश पर होती है।

बच्चों की सामूहिक बुद्धिमत्ता का प्रचार और हेरफेर करने वाली सामग्री का एक लंबा प्रदर्शन बच्चों में बुनियादी मूल्यों के निर्माण में एक बड़ी बाधा के रूप में सामने आएगा। आधुनिक जीवन में, आम तौर पर, अधिकांश माता-पिता पेशेवर काम करते हैं, जो अपने बच्चों के लिए मुश्किल से समय समर्पित करते हैं, जो बच्चों के बीच कार्टून के लगातार देखने के लिए एक और कारक है । हालांकि, कई काउंटर कथाएँ भी पनपती हैं जो कार्टून शो के पक्ष में बोलते हैं। कई माता-पिता इस बात से सहमत हैं कि, टीवी कार्टून उनके संतान को कब्जे में रखता है और एक सकारात्मक कार्टून हमेशा नैतिकता का प्रतिनिधित्व करता है और बच्चों को सीखने के लिए प्रभावी जीवन कौशल का संचार करता है। काउंटर कथा का दृढ़ता से मानना है कि चित्रित सकारात्मक कार्टून संभवतः नैतिक मूल्यों को सिखा और शिक्षित कर सकता है जो आज्ञाकारिता, शालीनता, समय की पाबंदी और दया की भावना स्थापित करेगा। बुनियादी दयालुता जैसे गरीबों की मदद करना, बहुत ईर्ष्या के बिना

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 4 July 2020

सहकर्मियों की मदद करना, दोस्ती के मूल्यों और माता-पिता का सम्मान करना कुछ बुनयादी नैतिक बातें हैं जो संभवतः बच्चों को कार्टून देखने से प्राप्त कर सकते हैं।

साहित्य की समीक्षा

1. (शैलेश राय, 2016)

बच्चों को कई वर्षों में कार्टून में बहुत रुचि हो गई है और यह कुछ जीवन का मूल कारण बन गया है। यह एक बड़ा खतरा बन गया है क्योंकि बच्चे बहुत सारे कार्टून कार्यक्रम देखते हैं और देखते हैं कि वे प्रकृति में नशे की लत और हिंसक हो गए हैं। जिस माहौल में बच्चों को पाला जाता है, उसी के अनुसार उन्हें अपने अनुसार ढाला जाता है। टीवी कार्यक्रम शुरू में इस माहौल का हिस्सा बन जाते हैं जो बदले में बच्चे के विकास और विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। इसलिए, सभी माता-पिता को यह समझना अनिवार्य है कि टीवी कार्यक्रम बच्चे को कैसे प्रभावित और प्रभावित करते हैं)।

2. (कपेलियन, 2009)

1800 के अंत में कार्टून पहली गति के चित्र की खोज के समय से इतिहास का एक हिस्सा रहा है। एक कार्टून मूल रूप से लाइव अभिनेताओं के बजाय फिल्म की एक चित्रण है, जो विशेष रूप से बच्चों के लिए बनाई गई एक मज़ेदार या हास्य फिल्म है। इसे थोड़ा बहुत चित्र या मॉडल के अनुक्रम की शूटिंग के द्वारा फिल्म बनाने के रूप में भी दर्शाया जा सकता है ताकि अनुक्रम दिखाई देने पर वे स्थानांतरित और परिवर्तित हो सकें। ये मुख्य तत्व हैं जो दर्शकों को विशेष रूप से बच्चों को अपनी सीटों से चिपकाए रखते हैं। पहले कार्टून इतने कम थे क्योंकि लोग फिल्म थिएटर में अपनी फीचर फिल्मों से पहले इस शॉर्ट्स को देखते थे। जब कार्टूनिस्टों ने टीवी पर अपने शो रखना शुरू किया, तो उन्होंने लंबे समय तक काम करना शुरू कर दिया, जिससे आज आधे घंटे का ब्लॉक शो कार्टून नेटवर्क, निकलोडियन और डिज़्नी चैनल पर है। इसके अलावा कार्टून शो अधिक परिवार के अनुकूल बनने वाले थे ताकि लोगों का भरपूर मनोरंजन शो को देखें।

3. (प्रियंबदा त्रिपाठी, 2016)

टेलीविजन वह है जो बच्चों को अधिक आकर्षित करता है और उनके व्यवहार को आकार देता है। एक बच्चे के व्यक्तित्व और व्यवहार को बहुत आसानी से पता लगाया जा सकता है क्योंकि वे कोरे कागज की तरह हैं। बाहरी प्रभाव और जानकारी जो नकारात्मक हैं, उनके चरित्र को प्रभावित कर सकते हैं क्योंकि वे स्वीकार कर रहे हैं कि जो भी उनके रास्ते में आता है। इसलिए, बच्चा जिस भी क्रिया या व्यवहार में आता है, वह उसके व्यक्तित्व लक्षण को प्रभावित कर सकता है। इससे बचने के लिए माता-पिता और अन्य बच्चों को बहुत सावधानी बरतनी चाहिए जो बच्चे विशेष रूप से टेलीविजन पर देखते हैं। बच्चों के व्यवहार को ज्यादातर टेलीविजन द्वारा आकार दिया जाता है क्योंकि वे लगभग हर समय इसके सामने होते हैं। आमतौर पर 6 महीने की उम्र से 3 साल तक के बच्चे कार्टून देखतें हैं और यही एकमात्र कारण है कि माता-पिता को सभी प्रकार के कार्टूनों के बारे में पूरी तरह से पता होना चाहिए जो उनके बच्चे देख रहे हैं और अपना अधिकांश समय दे रहे हैं।

4. (एंटोन-अलुजा फैब्रीगेट, राफेल-टोरूबिया बेल्ट्री, 1997)

बच्चों के लिए सबसे पसंदीदा कार्टून चैनलों में से एक कार्टून नेटवर्क है और इसे दुनिया भर के विनम्र बच्चों द्वारा देखा जाता है। केवल बच्चे पैदा करने वाली सामग्री के अनुसार, लेकिन उन्हें कुछ सकारात्मक और नकारात्मक आदतें भी दें। कार्टून देखने में बच्चों को प्रभावित करने वाले सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक आक्रामकता और हिंसा है। जो कुछ भी सामग्री में नकारात्मक है, वह बच्चे को कौशल, उसकी जीवन शैली, उसकी परवरिश के कौशल को उसके धर्म के अनुसार संदेह कर सकता है।

अध्ययन के उद्देश्य

Copyright © 2020 Authors

अध्ययन का मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है:

1. कार्टून का सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव ?
2. कार्टून के प्रकार और उनके पसंदीदा चैनलों पर बच्चों की रुचि के बारे में जानने के लिए, छोटा भीम ,सींचन ,डोरेमोन ,बुध और बद्री और टॉम एंड जेरी जैसे कार्टून प्रोग्राम बच्चों के बीच क्यों चलते हैं?
3. क्या इससे बाहरी गतिविधियों में गिरावट आई है?

शोध प्रविधि

अध्ययन का डिजाइन सर्वेक्षण और अध्ययन क्षेत्र पटना लिया गया है । इस अध्ययन के लिए जनसंख्या 100 ली गई है। वर्तमान अध्ययन 3-12 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों के माता-पिता के बीच किया गया । सरल यादृच्छिक नमूना विधि में से पूर्व प्राथमिक स्कूल से 50 और जूनियर स्कूल से 50 नमूना लिया गया ,और कुल नमूना का आकार 100 बनाया गया । डेटा संग्रह की विधि ,संरचित प्रश्नावली की 50 प्रतियां मुद्रित की गईं और डोर टू डोर सर्वे डेटा पूरी तरह से भरे प्रश्नावली के रूप में एकत्र किए गए थे। एक गूगल फॉर्म के मदद से प्रश्नावली बनाया गया और 50 उत्तरदाताओं को ईमेल में भेजा गया। प्राप्त सभी डेटा को समेट/मिला कर उनका विश्लेषण किया गया।

डेटा विश्लेषण

प्रतिक्रियाओं को माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल स्प्रेडशीट में संकलित किया गया था और कार्टून के प्रभाव के बारे में माता-पिता के विचारों के परीक्षण के लिए प्रतिशत विधि लागू की गई है।

परिणाम और परिचर्चा

तालिका 1: कार्टून के सकारात्मक प्रभाव के बारे में विचार (n = 100)

क्र.सं.	**कार्टून का सकारात्मक प्रभाव।**	**उत्तर**	**माता-पिता की संख्या का प्रतिशत**	**प्रतिशत**
1	कार्टून बच्चों की भाषा विकास में मदद करता है ।	हाँ नहीं	60 40	60% 40%
2	कार्टून में मदद करता है बच्चों का तेजी से मानसिक विकास करता है।	हाँ नहीं	64 36	64% 36%
3	कार्टून बच्चों में धार्मिक समझ बढ़ाने में मदद करता है ।	हाँ नहीं	25 75	25% 75%
4	कार्टून बच्चों के नैतिक विकास में मदद करता है ।	हाँ नहीं	55 45	55% 45%
5	कार्टून बच्चों की सीखने की क्षमता को बढ़ाता है ।	हाँ नहीं	75 25	75% 25%

तालिका 1 कार्टून के सकारात्मक प्रभाव से संबंधित माता-पिता के विचार के बारे में डेटा प्रस्तुत करता है। यह स्पष्ट है कि 60 प्रतिशत माता-पिता इस तथ्य से सहमत नहीं हैं कि कार्टून बच्चों के भाषा विकास में मदद करता है, लेकिन 64 प्रतिशत माता-पिता की सकारात्मक सोच थी कि कार्टून बच्चों के तेजी से मानसिक विकास में मदद करता है। 75 फीसदी माता-पिता सोचते हैं कि कार्टून से बच्चों में धार्मिक समझ नहीं बढ़ती है। 75 प्रतिशत और 55 प्रतिशत माता-पिता सहमत हैं कि कार्टून क्रमशः बच्चों के सीखने की क्षमता में नैतिक विकास और विर्धि में मदद करता है।

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 4 July 2020

तालिका 2: कार्टून के नकारात्मक प्रभाव के बारे में विचार (n = 100)

क्र.सं.	कार्टून के नकारात्मक प्रभाव	उत्तर	माता-पिता की संख्या का प्रतिशत	प्रतिशत
1	कार्टून में अधिक रुचि रखते हैं।	हाँ नहीं	95 5	95% 5%
2	बच्चे कार्टून पसंद करते हैं किसी अन्य खेल की तुलना में ।	हाँ नहीं	80 20	80% 20%
3	कार्टून का कोई नकारात्मक मनोवैज्ञानिक प्रभाव है।	हाँ नहीं	45 55	45% 55%
4	बच्चे टीवी देखने के बाद कार्टून कैरेक्टर की तरह व्यवहार करते हैं।	हाँ नहीं	60 40	60% 40%
5	कार्टून देखने के बाद आक्रामक व्यवहार करते है।	हाँ नहीं	85 15	85% 15%

तालिका 2 कार्टून के नकारात्मक प्रभाव से संबंधित माता-पिता के विचार से संबंधित डेटा दिखाती है। यह दर्शाता है कि अधिकांश माता-पिता (95%) सहमत हैं कि बच्चे कार्टून में अधिक रुचि रखते हैं और वे भी (80%) इस तथ्य से सहमत हैं कि बच्चे किसी भी अन्य खेल की तुलना में कार्टून पसंद करते हैं, लेकिन 60 प्रतिशत और 85 प्रतिशत से अधिक माता-पिता ने बताया कि बच्चे कार्टून की तरह व्यवहार करते हैं और आक्रामक होते हैं क्रमशः कार्टून देखने के बाद। लेकिन 55 प्रतिशत माता-पिता इस बात से सहमत नहीं हैं कि कार्टून का कोई नकारात्मक मनोवैज्ञानिक प्रभाव है।

निष्कर्ष

इस अध्ययन के बाद हमने पाया कि बच्चे कार्टूनों से अत्यधिक प्रभावित हैं। क्योंकि, वे पसंद करते हैं और अन्य खेलों और गतिविधियों के बजाय कार्टून पर ध्यान देते हैं। वे न केवल कार्टून चरित्र की तरह व्यवहार करते हैं, बल्कि वे कार्टून देखने के बाद भी आक्रामक हो गए हैं। अंत में हमने निष्कर्ष निकाला कि माता-पिता अपने बच्चों पर कार्टून के सकारात्मक प्रभावों से संतुष्ट नहीं हैं।

उसके विपरीत हमने यह भी पाया कि कार्टून बच्चों की सीखने की क्षमता को बढ़ाता है और बच्चों की भाषा विकास में मदद करता है ।

सूझाव

अध्ययन के निष्कर्षों के परिणाम के आधार पर, निम्नलिखित सूझाव दी जा सकती हैं:

1. माता -पिता , बच्चों को बाहरी खेल कुद के लिए प्रोत्साहित करें ।
2. कार्टून शो देखने के लिए समय का निर्धारण करें एवं साथ बैठ कर कार्टून देखे ।
3. कार्टून के चरित्र बच्चों पर हाबी न होने दे और कार्टून और वास्तविकता के बीच अंतर स्पष्ट करना चाहिए ।
4. उपयुक्त या शैक्षिक कार्टून का चयन करें ।
5. बच्चों को टीवी के सामने बैठकर उन्हें मत खाने दे ।

सन्दर्भ सूची

1. एचीमपोंग, आर। (2017)। बच्चों के व्यवहार पर कार्टून का प्रभाव। एकेडेमिया।

Copyright © 2020 Authors

2. अलुजा-फैब्रगैट, ए। और टोरूबिया-बेल्ट्री, आर। (1998)। बड़े पैमाने पर मीडिया हिंसा, हिंसा की धारणा, व्यक्तित्व और शैक्षणिक उपलब्धि को देखना। व्यक्तित्व और व्यक्तिगत अंतर
3. शैलेश राय, बीडब्ल्यू (2016)। बच्चों में व्यवहारिक, अभ्यस्त और संचारी परिवर्तन पर कार्टून कार्यक्रमों का प्रभाव। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कम्युनिटी मेडिसिन एंड पब्लिक हेल्थ।
4. शिखा गुप्ता, बीपी (2015)। बच्चों के फैशन पर कार्टून शो का प्रभाव। वैज्ञानिक अनुसंधान और प्रबंधन के इंटरनेशनल जर्नल।
5. कपेलियन (2009)। फिल्मों से लेकर टीवी तक; सांस्कृतिक बदलाव और कार्टून।

Copyright © 2020 Authors